श्री हनुमान का सूर्य तक पहुँचना
रामायण की एक कथा पर आधारित

बचपन में श्री हनुमान को आञ्जनेय (अञ्जना का पुत्र),के नाम से पुकारा जाता था। यह कहानी उनके पहले साहसिक कार्य, तथा किस प्रकार वे श्री हनुमान के नाम से जाने गए, इस बारे में बताती है।

आञ्जनेय को असाधारण शक्ति एवं दृढ़ता अपने माता-पिता, अञ्जना व केसरी से विरासत में मिली थी। वायु अर्थात् पवन देव, जो विश्व के श्वास-प्रश्वास हैं, आञ्जनेय को पुत्र के समान स्नेह करते थे, तथा वे यह जानते थे कि उसे भविष्य में एक महान उद्देश्य की पूर्ति करनी है। पवन देव ने आञ्जनेय को अपनी कुछ दैवी शक्तियाँ भी प्रदान की थीं, और जन्म से ही उसे अपने संरक्षण में ले लिया था।

यद्यपि आञ्जनेय दिव्य गुणों से सम्पन्न थे, परन्तु वे इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ थे कि वे अद्वितीय हैं। हिमालय के वनों में रहते हुए, वे घण्टों एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर झूलते रहते, वन के प्राणियों के पीछे भागते रहते और दूसरे वानर बालकों के साथ लुका-छिपी खेलते रहते थे। वे सदैव जीवन्त ऊर्जा से परिपूर्ण रहते थे।

एक दिन प्रातः जब आञ्जनेय नींद से उठे तो उन्हें अत्यधिक भूख लग रही थी। वे खाने की तलाश में अपनी कुटिया से बाहर निकले। उन्होंने पूर्व में क्षितिज पर, वन के ऊपर उदित होते हुए सूर्य को देखा। आश्चर्य-चकित होकर, उन्होंने वृक्ष पर लटकते हुए चमकते लाल गोले को देखा, जो एक पके हुए रसीले फल जैसा दिख रहा था। आञ्जनेय में जिज्ञासा उत्पन्न हो गई थी। उत्सुकतापूर्वक, वे सोच रहे थे कि इस चमकीले लाल फल का स्वाद कैसा होगा? आम जैसा? स्वादिष्ट तरबूज जैसा? जब उनकी भूख और बढ़ गई, तब उन्होंने निर्णय किया कि वे स्वयं जाकर पता लगाएँगे।

विशाल लाल फल जो उनका लक्ष्य था, उस पर पूरी तरह से अपना ध्यान केन्द्रित कर के उन्होंने हवा में छलांग लगा दी। उन्होंने आकाश में एक ऊँची उड़ान भरी, और सूर्य की ओर तीव्र गति से उड़ चले। उनके नीचे, पहाड़ एवं नदियाँ, वन एवं नगर, प्रातःकाल के उजाले में जगमगा रहे थे। जैसे-जैसे वे ऊपर की ओर बढ़ते जा रहे थे वे सब चीज़े और छोटी प्रतीत हो रही थीं। आञ्जनेय का ध्यान न तो अपने नीचे के संसार पर था और न ही अपने आसपास के विस्तृत आकाश पर। उनकी आँखें सूर्य पर टिकी हुई थीं, जिसे वे एक फल समझ रहे थे।

सूर्यदेव एक वानर बालक को, तीव्र गति से अपनी ओर आते देखकर, उलझन में पड़ गए और थोड़े भयभीत हो गए।

उन्होंने स्वर्ग के राजा को पुकारा, "हे इन्द्रदेव, मुझे आपकी सहायता की आवश्यकता है! "

इन्द्रदेव जो अपने बगीचों में शान्तिपूर्वक घूम रहे थे, उन्होंने सूर्यदेव को सहायता के लिए पुकारते हुए सुना और उनके अन्दर कौतूहल उत्पन्न हुआ। वे सोचने लगे "भला सूर्यदेव को किस सहायता की आवश्यकता हो सकती है? वे तो अपने समीप आने वाली हर वस्तु को जला सकते हैं।" उन्होंने अपनी सवारी, ऐरावत, जो एक विशाल सफेद हाथी है, उसे बुलाया और उसपर सवार होकर सूर्य की ओर उड़ चले।

वह यह देखकर चकित हो गए कि एक वानर बालक, सूर्य को आकाश से तोड़ने के लिए सूर्य के पास पहुँच गया था। इन्द्रदेव ने चिल्लाकर कहा, "रुक जाओ ! तुम कौन हो? तुम्हें क्या लगता है कि तुम क्या कर रहे हो?"

सूर्य की ओर अपनी अनियन्त्रित उड़ान को ज़ारी रखते हुए आञ्जनेय ने कहा, "मैं अञ्जना व केसरी का पुत्र आञ्जनेय हूँ। मैं इस सुन्दर सुनहरे फल को खाना चाहता हूँ।"

इन्द्रदेव को पहले तो यह हास्यास्पद लगा, फिर वे दोबारा बोले, "क्या मतलब है तुम्हारा? वह कोई फल नहीं है! वे सूर्यदेव हैं जो पृथ्वी को प्रकाश और जीवन सभी कुछ प्रदान करते हैं। तुरन्त ही पृथ्वी पर अपने घर को लौट जाओ।"

अपने लक्ष्य पर स्थिर रहते हुए तथा इन्द्रदेव की ओर ध्यान न देते हुए, आञ्जनेय ने सूर्य की ओर अपने हाथ बढ़ाए। वे सूर्य की गर्मी से लेशमात्र भी प्रभावित नहीं हुए। अब इन्द्रदेव को चिन्ता हो गई। स्वर्ग का स्थायित्व संकट में था। कुछ और सोचे बिना, उन्होंने अपना विशाल वज्र, वेगपूर्वक सीधे आञ्जनेय की ओर फेंका। यह प्रहार आञ्जनेय के जबड़े पर ज़ोर से लगा। इस प्रहार की शक्ति से आञ्जनेय मूर्छित हो गए और चक्कर खाकर नीचे गिरने लगे। वे चक्कर खाते-खाते नीचे पृथ्वी पर, एक निर्जन स्थान पर आ गिरे, और वहाँ मूर्छित अवस्था में पड़े रहे।

अपने अन्तर-ज्ञान से प्रेरित होकर पवनदेव उस निर्जन स्थान पर पहुँच गए, और शीघ्र ही उन्हें वह आहत बालक मिल गया। उन्होंने आञ्जनेय के मुख पर इन्द्र के वज्र के सुस्पष्ट चिह्न को पहचान लिया, और वे स्वर्ग की ओर अपनी मुट्ठी हिलाते हुए क्रोध से चिल्लाए, "हे इन्द्र, मैं इस बालक की ठुड्डी पर आपके वज्र का निशान देख रहा हूँ। आपने मेरे प्रिय बच्चे पर प्रहार करने का साहस कैसे किया? क्या

आप नहीं जानते कि यह कौन है? मैं इस पृथ्वी को छोड़कर चला जाउँगा और कभी भी वापस नहीं आउँगा!"

रोते-रोते, पवनदेव ने आञ्जनेय के शिथिल शरीर को कोमलता से अपनी भुजाओं में उठा लिया। पवनदेव ने हवा की सभी प्रकार की धाराओं का आवाहन किया, और उन्हें लेकर पृथ्वी के नीचे के लोक अर्थात् पाताललोक में चले गए। वहाँ उन्होंने पत्तियों तथा नर्म घास का बिस्तर बनाकर आञ्जनेय को उसपर लिटा दिया, और उनका हाथ पकड़कर उपचार हेतु गीत गाने लगे।

पवनदेव की अनुपस्थिति से पृथ्वी पर वायु का प्रवाह बन्द हो गया था। वृक्षों पर पत्तियों की सरसराहट नहीं थी। धान के खेतों में बालियों के लहलहाते झोंके नहीं थे। झीलों और नदियों में तरंगें नहीं थीं। हवा पुरानी एवं गतिहीन हो गई थी। न तो बारिश हो रही थी और न ही बादल थे। पौधे मुरझा गए थे। आग तड़तड़ाकर बुझ गई थी। पशु जहाँ थे वहीं लेट गए थे, उनमें खाना खाने के लिए भी शक्ति नहीं थी। लोग श्वास लेने के लिए संघर्ष कर रहे थे।

सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा ने, पृथ्वी की इस संकटपूर्ण स्थिति को देखा। उन्होंने देवताओं की एक सभा बुलाई जिसमें, विश्व के पालनहार एवं संरक्षक भगवान विष्णु, सूर्यदेव, तथा स्वर्ग के राजा इन्द्र, सम्मिलित थे।

भगवान ब्रह्मा ने दृढ़ता पूर्वक कहा, "इन्द्र, आपने बहुत वेग में आकर ऐसा कार्य किया। आपको बल प्रयोग करने के बजाय, समझाने का प्रयत्न करना चाहिए था। वह अभी एक बालक ही तो है!"

भगवान विष्णु ने कहा, "हाँ, और उसे एक अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस युग में पृथ्वी पर मैंने अयोध्या के राजकुमार, भगवान राम के रूप में जन्म लिया है। पृथ्वी पर पुनः प्रकाश फैलाने के मेरे विशेष ध्येय में यह बालक मेरी सहायता करेगा।"

भगवान ब्रह्मा एक बार फिर बोले, "हमें पवनदेव के पास जाना चाहिए। इन्द्रदेव उन्हें शान्त कर सकते हैं और हम सब उस दिव्य बालक को, अपना आशीर्वाद प्रदान कर सकते हैं।"

विचारों की गति से भी तेज़, कुछ ही क्षणों में भगवान ब्रह्मा और अन्य देवता पाताललोक में उस गुफ़ा के सामने पहुँच गए, जहाँ पवनदेव आञ्जनेय के पास बैठे थे।

भगवान ब्रह्मा ने अत्यन्त प्रेम भाव से कहा, "हे महान पवनदेव ! हम यहाँ प्रायश्चित करने तथा आपसे विनती करने आए हैं कि आप, पृथ्वी को अपना आशीर्वाद पुनः प्रदान करें। कृपया मुझे बालक का

उपचार करने दें।"

पवनदेव गुफ़ा से बाहर आए। उनके मुख पर अश्रुओं की धारियाँ बनी हुई थीं। उन्होंने देवताओं की सभा को आशंका से देखा।

इन्द्रदेव ने सच्चे हृदय से कहा, "मुझे बहुत दुःख है कि मैंने बालक पर प्रहार किया।"

पवनदेव ने कठोर दृष्टि से इन्द्रदेव की ओर देखा, परन्तु कुछ नहीं बोले। अपने सिर को धीरे से हिलाकर, पवनदेव ने संकेत किया कि वे सब अन्दर आ सकते हैं।

भगवान ब्रह्मा, मूर्छित बालक के पैरों के पास खड़े हो गए। आशीर्वाद देने के लिए उन्होंने अपने दिव्य हाथ उसके ऊपर उठाकर अपनी शक्ति से उस बालक को ढँक दिया और बोले, "आज से कोई भी अस्त्र या शस्त्र तुम्हें कभी हानि नहीं पहुँचा सकेगा। तुम्हारा शरीर वज्र के समान शक्तिशाली व अभेद्य हो जाएगा। तुम्हारे अन्दर, इच्छानुसार अपना रूप बदल सकने की क्षमता होगी, और जहाँ भी जाना चाहोगे वहाँ सहजता से पहुँच जाओगे।"

आञ्जनेय ने अपनी आँखें खोलीं और उठकर बैठ गए, तथा उत्सुकता से आसपास देखने लगे। उनका शरीर पहले से भी अधिक सशक्त हो गया था, किन्तु उनके जबड़े पर अभी भी इन्द्र के वज्र का निशान विद्यमान था।

ब्रह्माजी ने प्रेम भरी मुस्कान के साथ उन्हें देखा और कहा, "अपने इस खण्डित जबड़े के कारण अब से तुम श्री हनुमान के नाम से जाने जाओगे।"

पवनदेव ने मुस्कुराते हुए कहा, "श्री हनुमान, यह बहुत सुन्दर नाम है।"

इन्द्रदेव ने कहा, "श्री हनुमान, मुझे दुःख है कि मैंने तुम पर प्रहार किया। आज से तुम जब तक चाहोगे तब तक जीवित रहोगे। तुम चिरंजीवी हो, अमर हो।"

भगवान विष्णु ने आगे बढ़कर बालक के हृदय पर कोमलता से हाथ रखा और उसके अन्तर में कभी न बुझाई जा सकने वाली ज्योत जगा दी। उन्होंने बड़े प्रेम से कहा, "तुम भगवान के महान भक्त बनोगे।"

अन्त में सूर्यदेव आगे आए और हनुमान का हाथ पकड़कर बोले, "हनुमान, तुम अभी छोटे हो और तुम्हें बहुत कुछ सीखना है। मैं तुम्हारा गुरु बनूँगा। मैं अपना समस्त ज्ञान और प्रज्ञान तुम्हारे साथ बाँटूँगा।"

हनुमान ने शरारत भरी मुस्कान के साथ कहा, “धन्यवाद, सूर्यदेव। कृपया मुझे क्षमा करें। मैंने आपको, इस विश्व के महान प्रकाश को एक फल समझ लिया। आपका शिष्य बनना मेरे लिए गौरव की बात होगी, और मैं आपसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए बहुत उत्सुक हूँ।”

सभी हँसने लगे। पवनदेव ने कहा, “हे महान देवताओं, आपके आशीर्वादों के लिए धन्यवाद। अब हमें पृथ्वी के पालन-पोषण हेतु वापस चलना चाहिए। मैं आप सबको एक बड़े भोज महोत्सव के लिए आमन्त्रित करता हूँ।”

पवन के वेग से सभी देवता और श्री हनुमान वन में लौट आए। अञ्जना और केसरी अपने पुत्र को पुनः देखकर बहुत प्रसन्न हुए। सभी के चेहरों पर सुनहरी चमक लाते हुए, पश्चिम दिशा में, आकाश में सूर्यास्त होने लगा। तब सभी ने मीठे फलों, शहद, पके मेवों तथा दानों के भोज का आनन्द लिया।

अगले दिन से श्री हनुमान ने भगवान सूर्य के मार्गदर्शन में, प्रज्ञान प्राप्ति की दिशा में अपनी यात्रा आरम्भ की। दिन प्रतिदिन वे अधिकाधिक शक्तिशाली एवं बुद्धिमान होते गए। शीघ्र ही वे अपनी नियति को पूरा करने और भगवान राम की सेवा करने के लिए उपस्थित होंगे।

***

रामायण, *महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित एक महाकाव्य है। इसमें भगवान विष्णु के अवतार, भगवान राम की कथा का वर्णन है। इसे* **महाभारत** *के समान ही भारतीय साहित्य की महानतम रचनाओं में से एक माना जाता है।*

© २०१६ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउण्डेशन® । सर्वाधिकार सुरक्षित।